कश्मीर केन्द्रित हिंदी उपन्यासों का आलोचनात्मक अध्ययन

(1980-2014)

KASHMIR KENDRIT HINDI UPNYASON KA AALOCHNATMAK ADHYAYAN

(1980-2014)

Thesis Submitted for the partial fulfillment of the requirements for the degree

Doctor of Philosophy in Arts

By

नेहा चतुर्वेदी

NEHA CHATURVEDI

हिंदी विभाग

DEPARTMENT OF HINDI

मानविकी और सामाजिक विज्ञान संकाय

FACULTY OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES

प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता, भारत

PRESIDENCY UNIVERSITY, KOLKATA, India

जुलाई : 2023

July : 2023

कश्मीर केन्द्रित हिंदी उपन्यासों का आलोचनात्मक अध्ययन
(1980-2014)

KASHMIR KENDRIT HINDI UPNYASON KA AALOCHNATMAK ADHYAYAN
(1980-2014)

Thesis Submitted for the partial fulfillment of the requirements for the degree Doctor of Philosophy in Arts

By

नेहा चतुर्वेदी
NEHA CHATURVEDI

Under the Supervision of

प्रो. तनुजा मजुमदार
PROF. TANUJA MAJUMDAR

हिंदी विभाग
DEPARTMENT OF HINDI
मानविकी और सामाजिक विज्ञान संकाय
FACULTY OF HUMANITIES AND SOCIAL SCIENCES
प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता, भारत
PRESIDENCY UNIVERSITY, KOLKATA, India

July : 2023

जुलाई : 2023

घोषणा पत्र

मैं नेहा चतुर्वेदी घोषणा करती हूँ कि, पी-एच.डी. उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध **'कश्मीर केन्द्रित हिंदी उपन्यासों का आलोचनात्मक अध्ययन (1980-2014)'** को मैंने परिश्रमपूर्वक अध्ययन, मनन और शोध के उपरांत तैयार किया है। इस शोध कार्य में मुझे निर्देशक के रूप में डॉ. तनुजा मजुमदार, प्रोफ़ेसर, हिंदी विभाग, प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता का मार्गदर्शन मिला है।

उपर्युक्त शीर्षक शोध प्रबंध हिंदी विभाग, प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता के अलावा किसी अन्य विश्वविद्यालय या संस्थान में किसी उपाधि हेतु प्रस्तुत नहीं किया गया है।

Neha Chaturvedi

नेहा चतुर्वेदी 19/07/2023

हिंदी विभाग,

प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता

पंजीयन संख्या: R-17RS0121085

सपर्पण

माँ पापा को.....

PRESIDENCY UNIVERSITY
KOLKATA

Presidency University
Hindoo College (1817-1855), Presidency College (1855-2010)

प्रमाण-पत्र

प्रमाणित किया जाता है कि नेहा चतुर्वेदी ने पीएच-डी. उपाधि के लिए **'कश्मीर केन्द्रित हिंदी उपन्यासों का आलोचनात्मक अध्ययन (1980-2014)'** शीर्षक शोध प्रबंध मेरे निर्देशन में प्रस्तुत किया है।

यह शोध कार्य नेहा चतुर्वेदी की मौलिक कृति है, न तो इसका कोई अंग उनके द्वारा किसी उपाधि के लिए प्रस्तुत हुआ है और न ही मेरी जानकारी में अब तक किसी अन्य व्यक्ति ने इस पर शोध कार्य किया है।

मैं इन्हें शोध कार्य, आचरण और चरित्र की दृष्टि से इस उपाधि के लिए योग्य एवं उपयुक्त समझती हूँ।

तनुजा मजुमदार
19/7/2023

Prof. Tanuja Majumdar
Department of Hindi
Presidency University
Kolkata-700073

प्रोफ़ेसर तनुजा मजुमदार
शोध निर्देशक
हिंदी विभाग,
प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, कोलकाता

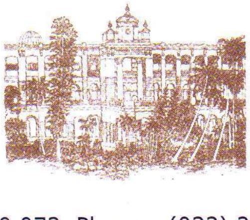

86/1, College Street, Kolkata - 700 073, Phone : (033) 2241 1960, Fax : (033) 2241 2738

भूमिका

भूमिका

'कश्मीर' केवल भारतीय उपमहाद्वीप में ही नहीं बल्कि पूरे विश्व में एक चर्चित भूखंड है। इस प्रदेश के प्राकृतिक सौन्दर्य के संबंध में कल्हण अपने ग्रन्थ 'राजतरंगिणी' में लिखते हैं, 'त्रिलोकयां रत्नसूः श्राध्या तस्यां धनपतेर्हरित्। तत्र गौरीगुरूः शैलो यत्तस्मिन्नपि मण्डलम्।। (अर्थात् तीनों लोकों में भूलोक श्रेष्ठ है, भूलोक में कौबेरी (उत्तर) दिशा की शोभा उत्तम है, उसमें भी हिमालय पर्वत प्रशंसनीय है और उस पर्वत पर भी कश्मीर मण्डल परम रमणीक है।)' प्राकृतिक सौन्दर्य से परिपूर्ण 'कश्मीर' एक ऐसा क्षेत्र है जो हमेशा विवादों से घिरा रहा है। इसका राजनैतिक इतिहास जितना जटिल है, उतना ही उथल-पुथल भरा इसका जनजीवन भी रहा है। हिंसा, आतंक, विस्थापन और अन्य देशों के हस्तक्षेप ने केवल एक भौगोलिक क्षेत्र को ही नहीं बल्कि उसके निवासियों को भी बुरी तरह से प्रभावित किया है।

प्रस्तुत शोध के अंतर्गत कश्मीरी जीवन और उसकी समस्याओं को कश्मीर केन्द्रित उपन्यासों के माध्यम से समझने का प्रयास किया गया है। समग्र शोधकार्य को छह: अध्यायों में विभाजित किया गया है।

प्रथम अध्याय 'कश्मीर: एक ऐतिहासिक यात्रा' है, जिसके अंतर्गत कश्मीर के मिथक, इतिहास, संस्कृति और राजनीति के अध्ययन को शामिल किया गया है। इस अध्याय में हिन्दू, इस्लाम और बौद्ध धर्म के अनुसार कश्मीर के उदय संबंधी कथाओं और ऐतिहासिक विवरण के आधार पर कश्मीर के अतीत को समझने की कोशिश की गई है। प्राचीन इतिहास के साथ ही कश्मीर में 'साझी विरासत' की परंपरा भी देखने को मिलती है। जिसके पुरोधा हैं- भक्त कवयित्री ललद्यद और मुसलमान ऋषि शेख नुरुद्दीन। इन दोनों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से एक ऐसे समाज की कल्पना प्रस्तुत की थी जहाँ सभी एक-दूसरे के धर्म का सम्मान करें और मिलजुल कर रहें। अतएव इस अध्याय में उनकी रचनाओं (वाख और श्रुख) के आधार पर कश्मीर की उस 'साझी

विरासत' को समझने का प्रयास किया गया है जिसकी उम्मीद कश्मीर केन्द्रित उपन्यासों में मिलती है। साथ ही इस अध्याय में कश्मीर की 1947 से 1990 तक की राजनीतिक घटनाओं के विश्लेषण को भी शामिल किया गया है।

द्वितीय अध्याय 'हिंदी कथा साहित्य में कश्मीर' के अंतर्गत कश्मीर को केंद्र बनाकर कथा लिखने की परंपरा को दिखाते हुए प्राप्त कश्मीर केन्द्रित कहानियों एवं उपन्यासों का विश्लेष्णात्मक परिचय दिया गया है। इस अध्याय के माध्यम से यह जानने का प्रयास किया गया है कि हिंदी कथा साहित्य की परम्परा में कश्मीरी जीवन के किन-किन पहलुओं पर चर्चा हुई है।

तृतीय अध्याय 'हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्त कश्मीर' में उपन्यासों में चित्रित कश्मीरी जीवन और उस जीवन की जटिलताओं को सम्पूर्णता में समझने का प्रयास किया गया है, जिसके अंतर्गत कश्मीर की साझी सांस्कृतिक परंपरा, हिंसा की राजनीति, विस्थापन, आर्थिक-सामाजिक संकट, अस्मिता का संघर्ष तथा साम्प्रदायिकता और पितृसत्तात्मक समाज के बीच जूझती कश्मीरी स्त्री की समस्याओं को भी वस्तुनिष्ठ और तार्किक दृष्टि से देखने-समझने की कोशिश की गई है।

चतुर्थ अध्याय 'कश्मीर: वर्तमान और भविष्य' है जिसके अंतर्गत' उपन्यासों में चित्रित कश्मीर के वर्तमान को आधार बनाकर संबंधों में होता बदलाव, बढ़ता संदेह और अविश्वास तथा आगामी भविष्य के प्रति चिंता और सब ठीक होने की उम्मीद पर प्रकाश डाला गया है। इस अध्याय में यह खोजने का भी प्रयास किया गया है कि चयनित उपन्यास कश्मीर-समस्या का कोई समाधान प्रस्तुत करते हैं या नहीं। इस अध्याय में उपन्यासों में दिए गए संभावित समाधानों का विश्लेषण भी किया गया है।

पंचम अध्याय 'कश्मीर केन्द्रित उपन्यास: शिल्प विधान' है जिसके अंतर्गत यह समझने का प्रयास किया गया है कि 'कश्मीर-समस्या' की अभिव्यक्ति के लिए रचनाकारों ने कैसी भाषा और

शैली को माध्यम बनाया है। कश्मीर केन्द्रित उपन्यासों में शिल्पगत चुनाव की दृष्टि से नवीनता और विविधता मिलती है। उपन्यासों में पात्रों की स्थिति और मन:स्थिति के अनुसार शिल्प का चुनाव बड़ी सजगता से किया गया है। ब्लॉग शैली, फेसबुक चैट और मैसेज आदि का प्रयोग जहाँ उपन्यास और उनके पात्रों को वर्तमान जीवन-शैली के निकट ले जाता है वहीं आत्मालाप और डायरी शैली का उपयोग कर पात्रों के अंतर्मन का विश्लेषण भी किया गया है। उपन्यासों में प्रयुक्त कश्मीरी भाषा के शब्दों, मुहावरों, लोकगीतों एवं लोककथाओं आदि के माध्यम से उपन्यासों में स्थानीयता का पुट भी मिलता है। शिल्प और भाषा की इन विशेषताओं पर इस अध्याय में प्रकाश डाला गया है।

षष्ठ अध्याय 'कश्मीर विमर्श: एक तुलनात्मक अध्ययन' है जिसके अंतर्गत चयनित उपन्यासों के कश्मीरी रचनाकारों जैसे- चन्द्रकान्ता, क्षमा कौल, मीरा कांत, संजना कौल और गैर कश्मीरी रचनाकारों जैसे, मनमोहन सहगल, पद्मा सचदेव, मनीषा कुलश्रेष्ठ, मधु कांकरिया एवं जयश्री राय के उपन्यासों का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

इस शोधकार्य में मेरी शोध-निर्देशक आदरणीय प्रोफ़ेसर तनुजा मजुमदार की भूमिका सवार्धिक महत्वपूर्ण है। कश्मीर-विवाद और उससे संबंधित अलग-अलग विचारों पर उनसे हुए संवाद और उनके मार्गदर्शन ने ही मेरी दृष्टि और समझ को एकपक्षीय होने से बचाए रखा। इस सहयोग के लिए मैं उन्हें हृदय से आभार प्रकट करती हूँ।

प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय, हिंदी विभाग के सभी आदरणीय प्राध्यापकों डॉ. वेद रमण पाण्डेय, डॉ. अनिंद्य गंगोपाध्याय, डॉ. ऋषि भूषण चौबे, डॉ. मुन्नी गुप्ता के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ जिनके सुझाव मुझे समय-समय पर मिलते रहे हैं।

प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय की 'परफॉर्मिंग आर्ट्स' की प्राध्यापक डॉ. देबोरती चक्रवर्ती के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने इस विषय को समझने की एक नई दृष्टि दी।

कलकत्ता विश्वविद्यालय (हिंदी विभाग) की पूर्व प्रोफ़ेसर चन्द्रकला पाण्डेय के प्रति भी विशेष आभार प्रकट करती हूँ जिन्होंने अपने सुझाव द्वारा मेरी शोध दृष्टि को और अधिक समृद्ध किया है।

कश्मीरी लेखक अग्निशेखर और निदा नवाज़ के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने सामग्री-संकलन करने एवं कश्मीरी-जीवन को समझने में मेरी सहायता की। लेखक अशोक कुमार पाण्डेय के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ जिन्होंने कश्मीर के राजनैतिक इतिहास को समझने में सहयोग दिया।

अपने शोधार्थी साथियों श्रद्धा सिंह, मधुमिता ओझा, कार्तिक राय, पूजा मिश्रा, पूजा प्रसाद, और बृजेश प्रसाद के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ जिनके सहयोग से सदैव मुझे उर्जा मिलती रही है।

अपने माता-पिता के प्रति जितना भी आभार व्यक्त करूँ वह कम है। उन्होंने इस यात्रा में मेरे हौसले को बनाए रखा और उनके प्रोत्साहन से ही मुझे निरंतर आगे बढ़ने की प्रेरणा मिलती रही है। बहन श्रद्धा चतुर्वेदी के प्रति भी आभार व्यक्त करती हूँ जिसने मेरे विश्वास को बनाए रखा और अंत में भतीजे अनुभव के लिए भी आभार।

साथ ही प्रेसीडेंसी विश्वविद्यालय के पुस्तकालय, राष्ट्रीय पुस्तकालय (कोलकाता), भारतीय भाषा परिषद (कोलकाता), साहित्य अकादमी (दिल्ली), केन्द्रीय पुस्तकालय (जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय), एवं जम्मू एंड कश्मीर अकैडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजिज़, जम्मू के प्रति विशेष आभार व्यक्त करती हूँ।

नेहा चतुर्वेदी